40

हाल ही में किसी अजगर को मारा है क्या?

(12:7-12)

प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ने पर लंदन के युद्ध मंत्रालय ने अफ्रीका के दूरगामी क्षेत्र में एक बर्तानवी चौकी को कोड में संदेश भेजा। संदेश था ''युद्ध घोषित। अपने जिले के सभी बाहरी शत्रुओं को गिरफ्तार करें।'' मंत्रालय को तुरन्त उत्तर प्राप्त हुआ: ''छह बैल्जियम वासियों, चार जर्मनों, चार फ्रांसीसियों, दो इटलीवासियों, तीन ऑस्ट्रिया वासियों और एक अमेरिकी को गिरफ्तार कर लिया गया है। कृपया तुरन्त बताएं कि इनमें से युद्ध में कौन-कौन सम्मिलित है।''[1] युद्ध की स्थिति में शत्रु की जानकारी होना लाभदायक होता है!

अध्याय 12 का अध्ययन आरम्भ करते हुए हमने ज़ोर दिया था कि हमारे आत्मिक शत्रु अर्थात *शैतान* को इस अध्याय में बड़े लाल अजगर के रूप में दिखाया गया था। हमने देखा कि हमारा शत्रु भयानक, खतरनाक, घबराया हुआ और क्रोध में है। इस पाठ में, उसकी घबराहट और क्रोध बढ़ जाता है, क्योंकि हर बार वह विफल रहता है। वचन में यहां पता चलता है कि शैतान वास्तव में *हारा हुआ* शत्रु है, यानी यह नहीं कि वह हार *जाएगा,* बल्कि यह कि वह *पहले से* ही हारा हुआ है।

12:7-12 में शैतान की पराजय पहले प्रतीकों में, फिर विजय के गीत में दिखाई देती है। इन आयतों से शैतान के क्रोध पर पराजय का प्रभाव दिखाई देता है।

शैतान की पराजय की वास्तविकता (12:7-9)

आयतें आरम्भ होती हैं:

> फिर स्वर्ग पर लड़ाई हुई,[2] मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकले, और अजगर और उसके दूत उस से लड़े। परन्तु प्रबल न हुए, और स्वर्ग में उनके लिए फिर जगह न रही। और वह बड़ा अजगर अर्थात वही पुराना सांप, जो इबलीस और शैतान कहलाता है, और सारे संसार का भरमाने वाला है, पृथ्वी पर गिरा दिया गया; और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए (आयतें 7-9)।

इन वचनों में क्या नहीं कहा गया

यह चर्चा करने से पहले कि इन आयतों में क्या बताया गया है यह ध्यान देना आवश्यक है कि इनमें क्या नहीं बताया गया। इन आयतों का उद्देश्य गिराए गए स्वर्गदूतों की थियोलॉजी (धर्मशिक्षा) बताना नहीं है।[3] ''प्रसिद्ध मसीही लहर, ... में युद्ध की कल्पना है, जिसमें मीकाईल की अगुआई में परमेश्वर के स्वर्गदूतों ने शैतान और उसके दूतों को सृष्टि के बनने से बहुत पहले स्वर्ग से नीचे गिरा दिया था।''[4] व्यापक रूप से स्वीकार किया जाने वाला यह अनुमान मिल्टन की *पैराडाइस लॉस्ट*[5] में प्रसिद्ध हुआ था जिसमें प्रकाशितवाक्य 12 से विचार लिए गए थे। एच. एल. एलिसन ने कहा है, ''इस पर वचन का कोई अधिकार नहीं, कम से कम इन सारे वचनों पर तो नहीं। दिया गया विवरण *प्रकाशितवाक्य* में बताई गई घटनाओं के घेरे में होने के कारण इसके पाठकों को प्रभावित करता है।''[6] रेअ समर्स की टिप्पणी है:

> इस वचन की व्याख्या पुराने नियम की अस्पष्ट आयतों या मिल्टन के *पैराडाइस लॉस्ट* के सम्बन्ध में करने के बजाय प्रकाशितवाक्य में इसके संदर्भ में होनी चाहिए। यह शैतान और उसके उस स्थिति से गिराए जाने की मूल स्थिति का ऐतिहासिक विवरण नहीं है; यह तो मसीह और उसके लोगों को नष्ट करने के शैतान के प्रयासों की तस्वीर पेश करने का अपोकलिप्टिक रूपक है।[7]

हमें आश्चर्य हो सकता है कि शैतान को किसने बनाया, परन्तु इसका विवरण ''उन गुप्त बातों'' में है (व्यवस्थाविवरण 29:29) जिन्हें परमेश्वर ने हमें बताने की आवश्यकता नहीं समझी। शायद इसलिए क्योंकि हम उसे समझ नहीं सकते थे और निश्चय ही इसलिए भी क्योंकि यह हमारे उद्धार के लिए आवश्यक नहीं था। इसके बावजूद इस विषय पर दिए गए बाइबल के कुछ संकेतों में आपकी दिलचस्पी है, तो वे इस प्रकार हैं:

शैतान को परमेश्वर ने ही बनाया होगा, क्योंकि सब कुछ परमेश्वर ने बनाया है (इफिसियों 3:9)। उसे आत्मिक जीव (इफिसियों 6:11, 12), सम्भवतया स्वर्गदूत (2 कुरिन्थियों 11:14) बनाया गया था। 1 तीमुथियुस 3:6 संकेत देता है कि *अभिमान* के कारण उसे ''दण्ड ...'' के लिए गिराया गया, परन्तु इसका कोई विवरण नहीं दिया गया। यूहन्ना 8:44 कहता है कि वह ''आरम्भ से हत्यारा है,'' जबकि 1 यूहन्ना 3:8 इसमें जोड़ देता है कि वह ''आरम्भ ही से पाप करता आया है।'' अफसोस की बात है कि हमें मालूम नहीं है कि ''आरम्भ'' का अर्थ ''उसकी सृष्टि का समय,'' ''जब उसने पाप करना आरम्भ किया,'' या ''मनुष्य के अस्तित्व का आरम्भ'' है। बाइबल अन्त में गिराए गए स्वर्गदूतों की बात बताती है (2 पतरस 2:4; यहूदा 6); परन्तु यह नहीं बताती कि उनका यदि शैतान से कोई सम्बन्ध था तो वह क्या था।[8]

अन्य शब्दों में हमारे पास अपने आप को आशा देने के लिए काफी जानकारी तो है परन्तु अपनी जिज्ञासा को संतुष्ट करने के लिए नहीं। परन्तु इसमें आश्चर्य की बात नहीं है कि रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिए लोगों ने अपनी कल्पनाओं का इस्तेमाल किया है। तौ भी

यह समझ आ जाना चाहिए कि प्रकाशितवाक्य 12 वाला ''शैतान और उसके दूतों का सृष्टि से पूर्व स्वर्ग से निकाला जाना किसी वास्तविक या काल्पनिक रूपक से कोई जुड़ा नहीं है।''[9] इसका उद्देश्य सताए जा रहे आरम्भिक मसीही लोगों को प्रोत्साहित करना था।

वचन के इस भाग को निकट से देखने से पूर्व, एक और नकारात्मक बात को पीछे हटाना आवश्यक है। युद्ध के दृश्य से थोड़ी देर पहले नर बालक को ''परमेश्वर के पास और उसके सिंहासन के पास उठा'' लिया गया था (12:5)। कुछ टीकाकार हार को न मानने को तैयार अजगर की कल्पना करते हैं, जो स्वर्ग के फाटकों तक उस बच्चे का पीछा करता है। वे कहते हैं कि मीकाईल वहां उसके रास्ते में आ गया, जो युद्ध छिड़ने का कारण बना। अजगर को हराकर फिर पृथ्वी पर गिरा दिया गया। यह दृश्य अध्याय 12 के भागों को जोड़ कर, नाटक में मिल जाता है और अध्याय की कुल शिक्षा को कोई हानि नहीं पहुंचाता। परन्तु संदर्भ के कई विवरण इस ढंग से मेल नहीं खाते।

पहले (और सबसे महत्वपूर्ण), 12:11 के अनुसार ''मेमने के लहू'' के द्वारा जय पा ली गई थी। मैं जी. आर. बिसले-मुर्रे से सहमत हूं कि लहू के बारे में टिप्पणी ''अध्याय की सबसे महत्वपूर्ण बात है।''[10] यह पूरे वचन पर प्रकाश डालती है। विजय लहू के द्वारा हुई और लहू क्रूस पर बहा था, इसका अर्थ यह हुआ कि अजगर को स्वर्ग पर उठाए जाने के बाद नहीं बल्कि *पहले* हराया गया था। कालक्रम के अनुसार अजगर को उस बच्चे के ''ऊपर उठाए'' जाने से पहले ''नीचे गिराया गया'' है।

यह भी ध्यान दें कि अजगर और उसके दूतों की पराजय का परिणाम यह था कि ''स्वर्ग में उनके लिए फिर जगह न रही'' (आयत 8)। इसका अर्थ यह था कि शैतान को स्वर्ग को ''हिलाने'' की आवश्यकता नहीं लगी होगी; इसके बजाय आयत 8 तक उसे वहां ''जगह'' थी। यह अजगर द्वारा ऊपर उठाए जा रहे बच्चे का पीछा करने के दृश्य से मेल नहीं खाता।

संदर्भ से मुझे निश्चय होता है कि 7 से 9 आयतों वाला ''युद्ध'' क्रूस पर मसीह के छह घंटों के संघर्ष के दौरान आरम्भ होने वाले आत्मिक युद्ध के पीछे का दृश्य था। शैतान को लगा कि यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना उसकी सबसे बड़ी विजय होगी परन्तु यही उसकी हार का सबसे बड़ा कारण बन गया।

7 से 9 आयतों में देखते हुए 12:11 को ध्यान में रखें।

आयतें क्या कहती हैं

आयत 7क कहती है, ''फिर स्वर्ग पर लड़ाई हुई,'' चाहे अगली आयत यह नहीं बताती कि यह लड़ाई *कब* हुई। यीशु के क्रूस पर होने के समय इसके होने की कोई बात नहीं लगती।

''मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़'' रहे थे (आयत 7ख)। मीकाईल प्रधान स्वर्गदूत है। वास्तव में नये नियम में केवल उसी को प्रधान स्वर्गदूत कहा गया है (यहूदा 9)।[11] ''स्वर्गदूत'' से पहले ''प्रधान'' शब्द ''के ऊपर'' का संकेत देता है। तात्पर्य

यह है कि वह ऊंची पदवी वाला स्वर्गदूत है और उसके अधीन स्वर्गदूत हैं। आयत 7 इसकारण "*उसके* स्वर्गदूत" की अर्थात उन स्वर्गदूतों की बात करती है, जो उसकी आज्ञा मानते हैं।

मीकाईल के नाम का अर्थ है "परमेश्वर जैसा कौन है ?" दानिय्येल में मीकाईल को परमेश्वर के लोगों का बचाव करने वाले के रूप में दिखाया गया है (दानिय्येल 10:13, 21; 12:1)। यहूदा 9 में मूसा की लाश पर शैतान से उसके झगड़े की एक अस्पष्ट बात मिलती है। हो सकता है कि हमें यह समझ न आए कि झगड़ा क्या था,[12] परन्तु कम से कम उस आयत से हमें यह पता चल ही जाता है कि शैतान के साथ झगड़ा मीकाईल के लिए कोई नई बात नहीं थी।[13]

"और अजगर और उसके दूत उस से लड़े" (आयत 7ग)। यह एक गंभीर लड़ाई थी। अजगर ने लड़े बिना समर्पण नहीं किया (और न करता है)। उसे और उसके साथियों को मालूम है कि उनका अनन्त भविष्य दांव पर लगा है।

"परन्तु प्रबल न हुए" (आयत 8क)। जैसा कि पिछले पाठ में बताया गया था, शैतान भयदायक तो है, परन्तु परमेश्वर नहीं है। वह सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और सर्वव्यापक नहीं है; उसकी शक्ति को परमेश्वर की शक्ति से नहीं मिलाया जा सकता। विशेषकर इस आयत में सिखाया गया है कि उसकी शक्ति की तुलना क्रूस की शक्ति से नहीं की जा सकती। यह फिर से हमें 12:11क का स्मरण कराता है, "वे मेमने के लहू के कारण ... जयवन्त हुए।"

शैतान की पराजय पर चर्चा करते हुए, कई लेखक उत्पत्ति 3:15 को अर्थात "सब प्रतिज्ञाओं की जननी" को ले आते हैं। विलियम हैंड्रिक्सन ने दावा किया कि प्रकाशितवाक्य 12 "बहुत ही स्पष्ट रूप से [उत्पत्ति] 3:15 पर आधारित है: दोनों में वही पात्र मिलते हैं; दोनों में वही सच्चाई बताई गई है।"[14] उत्पत्ति 3:15 में सर्प को शाप देते समय परमेश्वर ने कहा था, "और मैं तेरे और स्त्री के बीच में और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।" "इसके वंश" मसीह के लिए कहा गया था (देखें गलातियों 4:4),[15] जबकि सर्प शैतान को कहा गया था (देखें प्रकाशितवाक्य 12:9)। यह आयत सिखाती है कि मसीह ने शैतान का "सिर" कुचलना था (शारीरिक चोट) और उसकी अपनी "एड़ी" पर भी चोट लगनी थी (एक पीड़ादायक परन्तु अलौकिक घाव)। प्रतिज्ञा को क्रूस के पहलू से देखते हुए हम देखते हैं कि यह आयत इस बात की प्रतिज्ञा है कि जब मसीह मरा (एड़ी पर डसा गया[16]), तो उसने शैतान की शक्ति और अधिकार को नष्ट कर दिया (यानी उसका सिर कुचल दिया)। इसी कारण शैतान के गिरने के बारे में जॉन स्टॉट ने लिखा है:

> उसका *नीचे गिराया जाना* परमेश्वर के पुत्र के आगमन से ही आरम्भ हो गया था, जिस पर शैतान का कोई "वश नहीं" था (यूहन्ना 14:30)। [मसीह के] प्रकट होने का स्पष्ट उद्देश्य "शैतान के कामों को नाश" करना था (1 यूहन्ना 3:8)। यह काम पूर्ण रूप से उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान से पूरा हुआ।[17]

इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा कि यीशु मनुष्य बना "ताकि *मृत्यु के द्वारा* उसे

जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी अर्थात शैतान को निकम्मा कर दे'' (इब्रानियों 2:14)। पौलुस ने ज़ोर दिया कि यीशु जब मरा तो ''उस ने प्रधानताओं और अधिकारों को ... तमाशा बनाया'' (कुलुस्सियों 2:15; देखें आयत 14)। पतरस ने लिखा कि यीशु अब ''स्वर्ग पर जाकर परमेश्वर के दहिनी ओर बैठ गया; और स्वर्गदूतों और अधिकारी और सामर्थी उसके आधीन किए गए हैं'' (1 पतरस 3:22)।

यीशु के कष्ट की संध्या पर शैतान का अन्तिम तेज़ हमला था,[18] जिसमें उसने यहूदी और रोमी अधिकारियों को यीशु की हत्या के लिए इस्तेमाल किया। मसीह को क्रूस पर देखकर शैतान को अवश्य ही लगा होगा कि वह जीत गया है, परन्तु इतनी बुराई भी उसके काम न आ सकी।[19] शैतान पिलातुस की अदालत में जीत गया हो सकता है, परन्तु पुनरुत्थान में परमेश्वर ने इस फैसले को पलट दिया![20]

आइए वचन पाठ में वापस आते हैं। यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के कारण ''स्वर्ग में उन [शैतान और उसके दूतों] के लिए फिर जगह न रही'' (आयत 8ख)। इस आयत का अर्थ यह नहीं है कि शैतान मनुष्य की सृष्टि से पहले के युगों में किसी ऊंची पदवी से हाथ धो बैठा था, बल्कि यह शैतानी शक्तियों के हारने और मनुष्य जाति पर शैतान के अधिकार के कम होने को कहने का सांकेतिक ढंग है। होमेर हेली ने लिखा है, ''युद्ध में शैतान की पराजय होती है और उसे मनुष्यों पर भारी होने के स्थान से नीचे गिरा दिया जाता है।''[21]

एक क्षेत्र जिसमें शैतान की शक्ति कम हुई वह भ्रमित करने की उसकी योग्यता थी: आयत 9 में बताया गया है कि ''... शैतान ... जो सारे संसार का भरमाने वाला है, पृथ्वी पर गिरा दिया गया।'' अन्धकार में भ्रमित करना आसान है परन्तु जहां भी सुसमाचार का प्रकाश गया है, वहां लोगों के मनों से अन्धकार छंट गया है। मेरे यह लिखते हुए, जादूगरों का एक स्थानीय समूह स्टेज शो की तैयारी कर रहा है। कपड़ों के अभ्यास के समय कुछ प्रभाव देने के लिए हमें लाइटनिंग को देखना होगा। मुझे नहीं लगता कि मैं यह कहते हुए कोई रहस्यमय बात बता रहा हूं कि कुछ ट्रिक मद्धम रोशनी में ही होने चाहिए। तेज रोशनी अभ्यास के दौरान खतरनाक हो सकती है, वैसे ही जैसे सुसमाचार का चमकदार प्रकाश शैतान के उद्देश्यों के लिए विनाशकारी है।

परन्तु संदर्भ से यह संकेत मिलेगा कि यहां शैतान के गिराए जाने की बात मुख्यतया *आरोप* लगाने की उसकी क्षमता की बात है: गीत में विजय का जश्न मनाने के समय स्वर्गीय स्वर में कहा गया था कि ''हमारे भाइयों पर दोष लगाने वाला, *जो रात-दिन हमारे परमेश्वर के सामने उस पर दोष लगाया करता था,* गिरा दिया गया। और वे मेम्ने के लोहू के कारण, और अपनी गवाही के वचन के कारण, उस पर जयवन्त हुए,'' (12:10ख, 11क)।

पिछले पाठ में इस बात पर चर्चा करते हुए कि हम पर दोष लगाने वाला शैतान ही है मैंने अय्यूब पर आरोप लगाने के शैतान के काम को परमेश्वर की सेवा करना कहा था। इसी प्रकार से, शैतान ने परमेश्वर के लागों पर ''दिन-रात'' आरोप लगाना जारी रखा है। वह

कभी बन्द नहीं होता यानी वह कभी छुट्टी नहीं लेता। उसे धर्मियों की कमियों की ओर ध्यान दिलाने में आनन्द आता है परन्तु विश्वासियों के विरुद्ध आरोप लगाने के ''डंक'' को क्रूस ने निकाल दिया है।

कई साल पहले, मैंने स्वर्ग में अदालत की तस्वीर बनाते हुए एक प्रचारक को समझाते सुना था। परमेश्वर अर्थात न्यायाधीश के सामने मुकदमे के लिए खड़ा एक मसीही था। शैतान अर्थात अभियोजन पक्ष के वकील ने उन उल्लंघनों की एक लम्बी सूची खोल दी, जिनमें उस पर आरोप लगाए गए थे। फिर बचाव पक्ष का वकील यीशु खड़ा हुआ। वह आरोपी की ओर आ गया, उसके कन्धे पर हाथ रखते हुए कहने लगा, ''उन सभी अपराधों का दण्ड चुका दिया गया है। मैं इस व्यक्ति के पापों के लिए *मरा*!'' न्यायाधीश ने डेस्क पर हथोड़ा मारते हुए कहा, ''बरी!''

कहानी काल्पनिक है, परन्तु कचहरी के रूपक की किस्म पवित्र शास्त्र में मिलती है। परमेश्वर ''सबका न्यायी'' है (इब्रानियों 12:23)। जब हम पाप करते हैं ''पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात धार्मिक यीशु मसीह'' (1 यूहन्ना 2:1)। वास्तव में, नये नियम के समयों में ''आरोप लगाने वाला'' शब्द का इस्तेमाल अदालत में दूसरों पर आरोप लगाकर अपना निर्वाह करने वालों के लिए किया जाता था।[22] इसी कारण जी. बी.केयर्ड ने लिखा कि ''यूहन्ना ने मीकाईल और शैतान के बीच की लड़ाई का विवरण सैनिक शब्दावली में किया तो है, परन्तु यह दो विरोधी वकीलों के बीच एक कानूनी लड़ाई थी, ...'' फिर उसने अवलोकन किया कि कानूनी लड़ाई ''से उनमें से एक का वकालत करने का हक छिन गया।''[23] जे.डब्ल्यू.राबर्ट्स ने इस परिणाम को ऐसे ही शब्दों में संक्षिप्त किया है: ''अभियोजन पक्ष के वकील का स्वर्गीय अदालत में काम करने का अधिकार [छिन गया]।''[24]

रोमियों 8 भाइयों पर आरोप लगाने की शैतान की क्षमता खोने की बेहतरीन व्याख्या है:

> सो अब जो मसीह यीशु में है, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं।
> ... यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है? ... परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा? परमेश्वर ही है जो उनको धर्मी ठहराने वाला है। फिर कौन है जो दण्ड की आज्ञा देता है? मसीह ही है जो मर गया बरन मुर्दों में से जी भी उठा, और परमेश्वर की दाहिनी ओर है, और हमारे लिए निवेदन भी करता है (आयतें 1, 31-34)।

CEV में 33 और 34 आयतों को इस प्रकार अनुवाद किया गया है (सिवाय उन शब्दों के जो मैंने कोष्ठक में जोड़े हैं): ''यदि परमेश्वर कहता है कि उसके चुने हुए उसे ग्रहण है तो क्या कोई [शैतान सहित] उनके विरुद्ध आरोप ला सकता है? या क्या कोई [शैतान सहित] उन पर दोष लगा सकता है? नहीं, बिल्कुल नहीं! मसीह ... परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठकर उसके साथ आपके लिए बात करता है।'' जैसा कि राबर्ट माउंस ने कहा है, ''धर्मियों के विरुद्ध'' शैतान के ''आरोप दिन-रात चलते रहते हैं। मसीह की मृत्यु के

कारण वह सफलता पूर्वक परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध आरोप लगाने में सफल नहीं हो पाता (रोमियों 8:33-34)।''[25] ''सफलतापूर्वक'' शब्द को रेखांकित कर लें। हां, शैतान आज भी विश्वासियों पर आरोप लगाता है, परन्तु ''परमेश्वर अपने लोगों के विरुद्ध उसके आरोपों पर कान नहीं लगाएगा, क्योंकि उन्हें क्षमा किया जा चुका है।''[26] जैसा कि एलिसन स्किंटली ने कहा है, यीशु की मृत्यु से ''शैतान के मुंह पर ताला लग गया''![27]

शैतान की आत्मिक ''वकालत छिनने'' का सांकेतिक चित्रण आयत 9 में किया गया है: ''और वह बड़ा अजगर अर्थात वही पुराना सांप, जो इबलीस और शैतान कहलाता है, और सारे संसार का भरमाने वाला है, पृथ्वी पर गिरा दिया गया; और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए।''[28] (बड़े अजगर को पृथ्वी पर गिराते हुए मीकाईल का चित्र देख।)

शैतान हार चुका है। इसका अर्थ यह नहीं है कि वह अब सक्रिय नहीं रहा और न ही इसका अर्थ यह है कि अब और कोई लड़ाई नहीं होगी। ''मसीही लोग ... विजय पाने के लिए काम नहीं कर रहे हैं, बल्कि पहले से पाई हुई विजय के लिए काम कर रहे हैं''![29]

शैतान की पराजय का कारण (12:10-12)

10 से 12 आयतों में शैतान की पराजय का जश्न है। यूहन्ना ने लिखा, ''मैंने स्वर्ग पर से यह बड़ा शब्द आते हुए सुना, ...'' (आयत 10क)। ''बड़ा शब्द'' यहां पर स्वर्गीय कोरस से आया है।[30]

विजय के फल

आवाज़ ने पहले विजय के फलों की घोषणा की: ''अब हमारे परमेश्वर का उद्धार, और सामर्थ, और राज्य, और उसके मसीह का अधिकार प्रकट हुआ है'' (आयत 10 ख)। ''उद्धार,'' ''सामर्थ,'' ''राज्य'' और ''अधिकार'' भविष्य में पृथ्वी पर मसीह के काल्पनिक शासन की बात नहीं, बल्कि यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के तुरन्तु परिणामों की बात है: उसकी मृत्यु ने *उद्धार* को सम्भव बना दिया (रोमियों 5:9; देखें मरकुस 16:15, 16)। जी उठने के बाद यीशु ने कहा, ''स्वर्ग और पृथ्वी का सारा *अधिकार* मुझे दिया गया है'' (मत्ती 28:18)। जी उठने के बाद पहले पिन्तेकुस्त के दिन, मसीह का *राज्य सामर्थ* के साथ आया (मरकुस 9:1; प्रेरितों 1:8; 2:1, 4) यानी उसकी कलीसिया स्थापित हो गई।[31] हम में से वे लोग जो ये बातें सुनते बड़े हुए हैं कई बार इन्हें हल्के से लेते हैं, परन्तु निरन्तर आनन्द के कारण यही बातें हैं!

विजय का स्त्रोत (आयतें 11, 12क)

इससे हम आयत 11 अर्थात मुख्य बात पर आ गए हैं। आयत 11 विजय के मुख्य स्त्रोत के अलावा गौण स्त्रोत का उल्लेख करती है: ''और वे [भाई जिन पर आरोप लगे थे] मेमने के लोहू के कारण और अपनी गवाही के वचन के कारण, उस [शैतान] पर जयवन्त हुए, और उन्होंने अपने प्राणों को प्रिय न जाना, यहां तक कि मृत्यु भी सह ली'' (आयत 11)।

''जयवन्त हुए'' शब्द का अर्थ है ''विजयी हुए थे,''[32] जबकि ''मेमने के लहू'' ''परमेश्वर के मेमने के छुटकारा दिलाने वाले बलिदान की संक्षिप्त अभिव्यक्ति है। ...''[33]

यह पद यह नहीं कहता कि विजय मीकाईल के बड़ा योद्धा होने के कारण मिली थी। यह पद यह नहीं सिखाता कि मसीही लोगों ने अपनी ही सामर्थ और शक्ति के कारण शैतान पर ''विजय पाई'' थी।

> उन्होंने अपनी अधिक संख्या के कारण विजय नहीं पाई थी। वे तो बहुतों में से कुछ ही थे। ... पवित्र लोग अपनी समृद्धि या अपनी ऊंची सामाजिक पदवी के कारण नहीं जीते थे। उनमें इनमें से कोई बात नहीं थी। वे अपने प्रभाव के कारण नहीं जीते थे। ... उनका इतना [प्रभाव] नहीं था कि अपने आप को कालकोठरियों और जेलों से और सताव तथा मृत्यु से बचा पाते।[34]

इसके बजाय, विजय का मुख्य स्रोत ''मेमने का लहू'' था। अजगर के पृथ्वी पर फैंके जाने का ब्रायन का बनाया चित्र ध्यान से देखें तो आपको बादलों पर क्रूस की परछाई दिखाई देगी।

हाल ही के वर्षों में कुछ साम्प्रदायिक कलीसियाओं ने ''आधुनिक मनुष्य को अच्छा न लगने'' के कारण गीतों की किताब से ''लहू'' शब्द को निकाल दिया है। तौ भी बाइबल आज भी यही सिखाती है कि हमारा उद्धार यीशु के द्वारा ही है।

> तो मसीह का लोहू जिसने अपने आप को सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के साम्हने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो (इब्रानियों 9:14)।
>
> क्योंकि तुम जानते हो, कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बापदादों से चला आता है उससे तुम्हारा छुटकारा चान्दी सोने अर्थात नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। पर निर्दोष और निष्कलंक मेमने अर्थात मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ (1 पतरस 1:18, 19)।
>
> जो हमसे प्रेम रखता है, और जिसने अपने लोहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है (प्रकाशितवाक्य 1:5ख)।

प्रभु में भरोसा रखकर उसके नाम में बपतिस्मा (डुबकी) लेने पर यीशु का लहू हमारे पापों को धो डालता है (प्रकाशितवाक्य 7:14; प्रेरितों 22:16)। फिर उसके वचन के प्रकाश चलते रहने पर लहू हमें धोता रहता है (1 यूहन्ना 1:7)।

हर वर्ष लाखों लोगों के हार्ट अटैक से मरने की खबरें आती हैं। इनमें से अधिकतर को वास्तव में ''ब्लड अटैक'' अर्थात लहू आघात होते हैं। किसी न किसी कारण लहू हृदय, गुर्दों, फेफड़ों या मस्तिष्क तक नहीं पहुंच पाता। हमारे महत्वपूर्ण अंगों तक लहू का उचित बहाव होना आवश्यक है, वरना हम मर जाएंगे। इसी प्रकार यदि हम मसीह के साथ सदा

तक जीवित रहना चाहते हैं तो उसके लहू के बहाव से हमारे प्राणों का शुद्ध होते रहना आवश्यक है।[35] कलवरी शैतान का मृत्यु का प्रहार हो सकती है, परन्तु यह हमारा जीवन-प्रवाह बन गया है।[36]

यह समझ आ जाने पर कि यीशु के लहू के द्वारा उद्धार का क्या अर्थ है आपके लिए ऐसे शब्दों का अर्थ विशेष हो जाता है:

> मेरा पाप-इस महिमामय विचार का आनन्द-
> मेरा पाप, थोड़ा सा नहीं, बल्कि पूरा,
> क्रूस पर टांग दिया गया और अब मुझ पर से इसका बोझ उतर गया है:
> प्रभु की महिमा कर, हे मेरे प्राण, प्रभु की महिमा कर![37]

आयत 11 भी विजय के *दूसरे* स्रोत के बोर में बताती है: आज्ञा मानने के द्वारा मनुष्य का क्रूस को ग्रहण करना।[38] यीशु सबके लिए मरा (2 कुरिन्थियों 5:15; तीतुस 2:11), परन्तु उद्धार सबका नहीं होगा (मत्ती 7:13, 14)। हर व्यक्ति के लिए खुद यह निर्णय लेना आवश्यक है कि प्रभु द्वारा उपलब्ध कराए उद्धार का लाभ लेना चाहता है या नहीं।

आयत 11 में विश्वासी मसीही जीवनों के दो पहलू बताए गए हैं: (1) वे मसीह के अपने समर्पण में विश्वासी हों: "और वे ... अपनी गवाही के वचन के कारण [शैतान] पर जयवन्त हुए" (आयत 11क, ख)। वे प्रचार करने में यीशु के विश्वासी थे। "शैतान को जितनी भी कहानियों से घृणा है, उनमें [सबसे बढ़कर] सुसमाचार है। जितनी भी बातें उसे पगला बना देती हैं, उनमें सबसे बढ़कर यीशु की बातें हैं।"[39] इसके अलावा वे यीशु के लिए जीने में भी विश्वासी थे। वे "अजगर द्वारा आकार दिए संसार में मसीह के स्वरूप में ढले" जीवन जीने की कोशिश करते थे।[40]

(2) वे तब भी विश्वासी थे, जब उनके जीवन खतरे में थे: "और उन्होंने अपने प्राणों को प्रिय न जाना, यहां तक कि मृत्यु भी सह ली" (आयत 11ग)। यीशु ने अपने चेलों को बताया था, "क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिए अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा" (8:35; देखें यूहन्ना 12:24, 25)। यूहन्ना और मसीह की बातों का भाव पौलुस द्वारा स्पष्ट किया जाता है, जिसने अपने मित्रों को बताया:

> ... मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता: कि ... उस सेवकाई को पूरी करूं, जो मैं परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही दूं (प्रेरितों 20:24)।
>
> ... मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिए यरूशलेम में न केवल बान्धे जाने ही के लिए बरन मरने के लिए भी तैयार हूं (प्रेरितों 21:13)।

आरम्भिक मसीहियों की विश्वासयोग्यता पर क्लोविस चैप्पल का यह कहना था:

> उन्होंने विजय पाई क्योंकि वे विजय का दाम चुकाने को तैयार थे। वे जयवन्त हुए

> क्योकि उन्होंने सौदेबाजी करने की कोशिश नहीं की। उन्होंने शब्दों पर बहस नहीं की। ... वे दाम की बात पर मोल-भाव में नहीं पड़े। ... वे जयवन्त हुए क्योंकि उन्होंने विजय को इतना श्रेष्ठ माना कि इसके लिए कुछ भी देने को तैयार थे, यहां तक कि इसे पाने के लिए अपने प्राण तक।[41]

ध्यान दें कि ''वचन यहां यह नहीं कहता कि पवित्र लोग शहीद होने को प्रिय जानते थे। यह कहता है कि उन्होंने 'अपने प्राणों को प्रिय न जाना।' यह इस पर चर्चा नहीं है कि वे मृत्यु को कैसे देखते थे, बल्कि इस पर है कि उन्होंने अपने प्राणों को कैसे देखा!''[42] कुछ लोग अपने विश्वास के लिए मर गए, जबकि अन्य नहीं मरे, परन्तु सब में ''शहीद होने का मन'' था[43] यानी वे अपने विश्वास के लिए मरने को भी*तैयार* थे। उन्होंने अपनी प्राथमिकताओं की रूपरेखा बना ली थी, जिस कारण यह लगने पर कि शैतान जीता ही जीता और वह हावी हो जाएगा, जब उसने उन्हें मार ही डाला तो वही उसकी पराजय और उनकी विजय का समय था।[44]

इसीलिए आवाज़ ने कहा, ''इस कारण, हे स्वर्गो,[45] और उनमें के रहने वालो मगन हो'' (आयत 12क)। ये शब्द सम्भवतया मसीही लोगों से कहे गए थे, जो इस पृथ्वी को छोड़ चुके थे। वे मगन हो सकते थे, क्योंकि लहू के द्वारा उनका उद्धार हुआ था और अब अजगर से उन्हें कोई खतरा नहीं था।

शैतान की पराजय के परिणाम (12:12ख)

आयत 12 के अन्त में विजय का गीत जारी रहता है, परन्तु मैंने इसे अलग कर दिया है, क्योंकि यह शैतान की पराजय के पीड़ादायक परिणाम की बात करता है। मगन होने का कारण केवल उसकी पराजय नहीं थी; इससे शोक करने का उद्देश्य भी मिल गया। अजगर को हराया गया था, परन्तु नष्ट नहीं किया गया था, और हारा हुआ अजगर खूंखार होता है। उसका क्रोध बढ़ता रहा जब तक वह फटने तक नहीं आ गया। वह किसी न किसी पर, चाहे कोई भी हो, अपना क्रोध उतारने को तैयार था।

इसलिए आवाज़ ने सावधान किया, ''हे पृथ्वी, और समुद्र, तुम पर हाय! क्योंकि शैतान बड़े क्रोध के साथ तुम्हारे पास उतर आया है'' (आयत 12ख)। ''पृथ्वी और समुद्र'' शैतान के प्रभाव वाले क्षेत्र को कहा गया है।[46] ''पृथ्वी और समुद्र में रहने वालों'' के पास शैतान को उन्हें अपने उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल करने और उनकी भलाई की कोई चिन्ता न होने के कारण चिन्तित होने का कारण है।[47]

अजगर के ''बड़े क्रोध'' का एक कारण यह है कि वह ''जानता है, कि उसका थोड़ा ही समय और बाकी है'' (12:12ग)। ''उसके दिन गिनती के हैं''[48] उसे मालूम है कि दण्ड उसकी प्रतीक्षा कर रहा है (20:10)। इसी दौरान वह प्रभु के अनुयायियों को जितनी हो सके पीड़ा और कष्ट पहुंचाने के लिए दृढ़ निश्चय है।

घायल पशुओं के निकट सावधान होने के एक लड़के को दी गई सलाह का कुछ भाग मुझे मिला। घायल पशु किसी पर भी चाहे कोई भी हो प्रहार कर देगा। अध्याय 12 के अन्त

में अजगर घायल पशु है और वह पहले से भी खतरनाक हो गया है। इस कारण लियोन मौरिस ने लिखा है, ''सताए गए धर्मियों की समस्याओं का बढ़ना शैतान के बहुत सामर्थी होने के कारण नहीं बल्कि इसलिए है क्योंकि उसे मार पड़ी है।''[49] परमेश्वर के लोगों के बारे में किए गए दुर्भावनापूर्ण कार्य ''हारे हुए शत्रु के अन्तिम विरोध हैं।''[50]

इस सबसे इस बात का पता चल जाता है कि शैतान इतना क्रोधित क्यों है और वह मसीह लोगों का नाश करने पर उतारू क्यों है। शेष कहानी अध्याय 12 पर अगले (और अन्तिम) पाठ में बताई जाएगी।

सारांश

वही परमेश्वर जिसने यीशु को शैतान का सिर कुचलने के योग्य बनाया ''शैतान को *तुम्हारे* पांवों से शीघ्र कुचलवा देगा'' (रोमियों 16:20)। प्रभु आपको यीशु के द्वारा विजय देगा। *यदि,* आयत 11 वाले लोगों की तरह आप दाम चुकाने को तैयार हैं।

अंग्रेज़ी की दंतकथाओं में प्रसिद्ध राजा आर्थर की कथा है, जिसके बारे में माना जाता है कि उसके पास उसका एक बहुत बड़ा गोल मेज़ था, जहां वह अपने योद्धाओं के साथ सभा किया करता था। अपने योद्धाओं को दिया उसका एक काम आग उगलने वाले अजगरों को मार डालना था, जिनसे देश में आतंक फैलाया हुआ था। दंतकथा में कई योद्धाओं को बड़े ''अजगर मारने वाले'' कहा जाने लगा। आप और मैं ''अजगर मारने वाले'' कभी नहीं कहलाएंगे; परन्तु अध्याय 12 के अनुसार ''गवाही पकड़े होने'' और ''प्राण देने तक'' अपने प्राणों को प्रिय न जानकर हम उस ''बड़े लाल अजगर'' को हराते रहने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

एक बार फिर, अब अपनी जांच करने का समय है। आइए अपने आप से यह प्रश्न पूछते हैं: ''क्या हम वचन सुनाने में विश्वासयोग्य हैं''; ''क्या हमने अपने जीवन की प्राथमिकताओं की सूची बना ली है?''; ''क्या हम अपने विश्वास के लिए *मरने* को तैयार होंगे?''[51]

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस पद का साधारण शीर्षक ''स्वर्ग में लड़ाई'' है। मायर पर्लमैन ने इसे ''स्वर्ग में लड़ाई-पृथ्वी पर क्लेश'' शीर्षक दिया है। एक और सम्भावित शीर्षक ''विजय का रहस्य'' है। एल्बर्ट बाल्डिंगर ने इसे ''पवित्र युद्ध'' नाम दिया है। यदि आप इस ढंग का इस्तेमाल करते हैं तो अध्याय 12 की तुलना पृथ्वी पर होने वाले कथित ''पवित्र युद्धों'' से कर सकते हैं।

बेहतरीन अतिरिक्त प्रवचन लहू के द्वारा उद्धार पर होगा । इस प्रवचन को आरम्भ से परमेश्वर की योजना में लहू के इस्तेमाल पर, क्रूस पर यीशु ने हमारे लिए क्या किया और लहू से लाभ कैसे उठाएं पर केंद्रित रखा जा सकता है। एक सम्भावित शीर्षक ''क्रूस का मार्ग घर को पहुंचाता है'' हो सकता है। यदि आप इस विचार का इस्तेमाल करते हैं तो बपतिस्मे, प्रभु भोज, और कलीसिया के साथ मसीह के लहू के सम्बन्ध की व्याख्या करें।

टिप्पणियां

[1]यह उदाहरण पाल ली टैन, *इन्साइक्लोपीडिया 7700 इलस्ट्रेशंस* (रॉकविल्ले, मेरीलैंड: अश्योरेंस पब्लिशर्स, 1979), 1574 से लिया गया था। [2]पिछले पाठ में हम ने सुझाव दिया था कि 1 और 3 आयतों में ''स्वर्ग'' आकाश को कहा गया है। 7 से 9 आयतों में ''स्वर्ग'' सम्भवतया परमेश्वर के विशेष निवास को कहा गया है। याद रखें कि यह केवल संकेत है। [3]यह वाक्य राबर्ट माउंस, द *बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस कं., 1977), 238 से लिया गया था। [4]एच. एल. एलिसन *1 पीटर-रैवलेशन,* स्क्रिप्चर यूनियन बाइबल स्टडी बुक सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस कं., 1969), 67. [5]जॉन मिल्टन 1608-74 में हुआ एक अंग्रेज़ कवि था। उसका सबसे प्रसिद्ध काम *पैराडाइस लॉस्ट* (1667) संसार की महान कृतियों में माना जाता है। [6]एलिसन, 67. [7]रेअ समर्स, *वर्धी इज़ द लैंब* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951), 172-73. [8]कई लेखक लूसिफर से जुड़ी आयतों को शैतान के मूल से सम्बन्धित आयतों से जोड़ते हैं (यशायाह 14:12; KJV), चाहे संदर्भ से स्पष्ट हो जाता है कि यह आयत बाबुल के राजा की बात कर रही है (यशायाह 14:4; KJV)। कुछ लोग आपत्ति करते हैं कि बाबुल के राजा के लिए ये आयतें कुछ अधिक ही भड़कीली हैं और ''इस कारण राजा के लिए शैतान जैसा कहने के लिए होनी चाहिए।'' वे शायरी की भाषा को नज़रअंदाज़ करते हैं अपनी मर्ज़ी से फैसला करते हैं कि यह शैतान का प्रतिरूप है। संदर्भ में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि पवित्र आत्मा के मन में यहां शैतान की बात थी। इस सूची में आम तौर पर जोड़ा जाने वाला एक और हवाला लूका 10:18 है। (टिप्पणी 17 देखें।) [9]जे. डब्ल्यू. राबर्ट्स, द *रैवलेशन टू जॉन (द अपोकलिप्स),* द लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़ (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1974), 102. [10]जी. आर. बिसले-मुर्रे, द *बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू सैंचुरी बाइबल कमैंट्री सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस कं., 1974), 203.

[11]प्रधान दूत का एक और हवाला 1 थिस्सलुनीकियों 4:16 में मिलता है, परन्तु उस प्रधान दूत का नाम नहीं दिया गया। कइयों का मानना है कि यह मीकाईल की बात है। [12]यहूदा 9 शायद यहूदा की सबसे कठिन आयत है। मूसा के दफ़नाए जाने का विवरण व्यवस्थाविवरण 34:6 में है, परन्तु वहां मीकाईल और शैतान के बीच किसी लड़ाई की बात नहीं है। परमेश्वर की प्रेरणा रहित पुस्तकों में यहूदा के स्रोत को ढूंढ़ने के प्रयास हुए हैं, परन्तु यहूदा को तो यह बात परमेश्वर से मिली थी। यहूदा 9 से हमें पता चलता है कि मीकाईल और शैतान के बीच झगड़ा हुआ था (बिना विवरण जाने); परन्तु इससे भी महत्वपूर्ण (यह आयत का मुख्य विचार है), हमें पता चलता है कि शैतान के साथ बात करते हुए मीकाईल एक सीमा में रह कर ही बोल सकता था। [13]कई लोग पूछते हैं कि ''मीकाईल ही क्यों, कोई और क्यों नहीं, क्या पता यीशु ही हो?'' ऐसे विवरणें से हमें परेशान नहीं होना चाहिए। यह तो *संकेत* है, जो भलाई और बुराई के बीच लड़ाई को दर्शाता है। [14]विलियम हैंड्रिक्सन, *मोर दैन कंकरर्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1954), 165. [15]''इसके वंश'' हव्वा की संतान को कहा गया हो सकता है, परन्तु यह वचन में आगे दिए एकवचन शब्द ''वह'' से पता चलता है। इस कारण ''इसके वंश'' वाक्यांश उसकी संतानों में से केवल *एक* के लिए है। विशेषकर यह यीशु के लिए है। [16]*पुनरुत्थान* से यह सिद्ध हो गया कि क्रूस पर यीशु की मृत्यु ''एड़ी'' को डंसना ही था (अलौकिक घाव)। [17]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, द *लैटर्स टू जॉन,* संशो. संस्क., टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस कं., 1988), 142. अपने कथन के समर्थन में स्टॉट ने यूहन्ना 12:23, 27, 31, 32; 16:11 का इस्तेमाल किया। एक और आयत जो यीशु की सेवकाई से शैतान के निकाले जाने की बात करती है लूका 10:18 है, जो ''स्वर्ग से'' शैतान के गिराए जाने की बात है। लूका 10:18 को मिलती-जुलती भाषा होने के कारण आमतौर पर प्रकाशितवाक्य 12:7-10 से जोड़ा जाता है; परन्तु संदर्भ में यह चेलों द्वारा दुष्टात्माओं को निकालने में सक्षम होने पर मनुष्यों पर शैतान की शक्ति कम होने की बात है। प्रकाशितवाक्य 20:1-3 में शैतान के ''बांधे जाने'' के सम्बन्ध में लूका 10:18 पर विस्तार से चर्चा की जाएगी। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की आगामी पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 5'' में ''शैतान का बान्धा जाना'' पाठ देखें। [18]इस वाक्य का पहला भाग मार्टिन एच. फ्रैंजमैन, द *रैवलेशन टू जॉन* (सेंट. लुईस, मिजोरी: कोनकोर्डिया

पब्लिशिंग हाउस, 1976), 87 से लिया गया है। [19]इस वाक्य का अन्तिम भाग मैरिल सी. टैनी, *प्रोक्लेमिंग द न्यू टैस्टामेंट: द बुक ऑफ रैवलेशन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1963), 62 से लिया गया। [20]यह वाक्य राबर्ट, 102 से लिया गया।

[21]होमेर हेली, *रैवलेशन: एन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979), 273. [22]देखें विलियम बार्कले, *द रैवलेशन ऑफ़ जॉन,* अंक 2, संशो. संस्क. द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1976), 83. [23]जी. बी. केयर्ड, *ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन द डिवाइन* (लंदन: एडम एण्ड चार्ल्स ब्लैक, 1966), 155. [24]राबर्ट्स, 102. [25]माउंस, 243. [26]बिसले-मुर्रे, 202. [27]एलिसन, 67. [28]इस आयत पर टिप्पणियों के लिए इस्तेमाल किए गए शब्दों सहित पिछला पाठ देखें। [29]लियोन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो. संस्क., द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 157. [30]आयत 10 में ''हमारे'' शब्द इस्तेमाल हुआ है यानी यूहन्ना ने *कई* आवाज़ें सुनीं।

[31]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में प्रेरितों 2 पर प्रवचन और उसी पुस्तक में पृष्ठ 97 पर ''राज्य/कलीसिया की स्थापना'' पर अतिरिक्त लेख देखें। [32]''जयवन्त'' ''विजय'' के लिए यूनानी शब्द *nike* के क्रिया रूप का अनुवाद है। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में पृष्ठ 68 पर क्रिया रूप *nikao* पर नोट्स देखें। [33]बिसले-मुर्रे, 203. [34]क्लोविस जी. चैप्पल, *सरमन्स फ्राम रैवलेशन* (न्यू यार्क: अबिंग्डन प्रैस, 1943), 177. [35]यह उदाहरण जॉन स्टेसी, *प्रीचिंग थ्रू रैवलेशन* (विनोना, मिसिसिप्पी: जे. सी. चोट पब्लिकेशंस, 1983), 116 से लिया गया था। [36]यह वाक्य मायर पर्लमैन, *विंडोज़ इन टू द फ्यूचर: डिवोशनल स्टडीज़ इन द बुक ऑफ रैवलेशन* (स्प्रिंगफील्ड, मिजोरी: गॉस्पल पब्लिशिंग हाउस, 1941), 106 से लिया गया था। [37]एच. जी. स्पेफोर्ड ''इट इज़ वैल विद माई सोल,'' *सौंग्स ऑफ़ चर्च,* संपा. आल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, लुईसियाना: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1977)। [38]देखें 12:17, जिसमें इस बात का उल्लेख है कि उद्धार पाए हुए लोग ''परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं।'' [39]जिम मैक्गुइगन, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन, लुकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़* (लब्बॉक, टैक्सस: इंटरनैशनल बिब्लिकल रिसोर्सिस, 1976), 177. [40]*रैवलेशन: होली लिविंग इन एन अनहोली वर्ल्ड: रैवलेशन,* द फ्रांसिस एस्बरी प्रैस कमैंट्री सामा.संस्क., एम. रॉबर्ट मुल्होलैंड, जूनि. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: फ्रांसिस एस्बरी प्रैस ऑफ़ जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1990), 222.

[41]चैप्पल, 179. [42]मैक्गुइगन, 180. [43]हेली, 276. [44]इस वाक्य का अन्तिम भाग फिलिप्प ई.ह्यूग्स, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन: ए कमैंट्री* (ग्रैड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1990), 140. [45]प्रकाशितवाक्य में ''स्वर्ग'' का बहुवचन रूप केवल यहीं मिलता है। किसी को पक्का पता नहीं है कि यहां बुहवचन रूप और अन्य स्थानों पर एकवचन रूप इस्तेमाल क्यों किया गया है। यह इस बात का विवरण है कि सम्भवतया इसका कोई महत्व नहीं। [46]संदर्भ में पृथ्वी ही वह ग्रह है, जिस पर हम रहते हैं (देखें 12:16)। [47]मैक्गुइगन, 181. [48]बिसले-मुर्रे, 202. ''उसका थोड़ा ही समय और बाकी है'' वाक्यांश का अर्थ सम्भवतया मसीही लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए है कि शैतान उन्हें केवल ''थोड़ी देर'' के लिए सता सकता है। [49]मौरिस, 158. [50]टी. एफ. ग्लेसन, *द रैवलेशन ऑफ़ जॉन,* द कैम्ब्रिज बाइबल कमैंट्री ऑन द न्यू इंग्लिश बाइबल सीरीज़ (कैम्ब्रिज, इंग्लैंड: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस, 1965), 75. [51]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाता है तो हर सुनने वाले को अपने आप को परखने और प्रभु के साथ अपना सम्बन्ध सुधारने के लिए जो कुछ करना आवश्यक हो वह करने के लिए कहें। ''परमेश्वर के गवाह'' पाठ में टिप्पणी 40 देखें।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. पाठ में यह जोर क्यों दिया गया है कि 12:7-12 मनुष्य की सृष्टि से पूर्व शैतान की बात *नहीं* सिखा रहा? क्या आप इस निष्कर्ष से सहमत हैं या असहमत?

2. बाइबल शैतान के आरम्भ के बारे में क्या बताती है ? हो सकता है हम इससे और अधिक जानना *चाहते* हों, परन्तु हमारे लिए इतना ही जानना *आवश्यक* है।
3. पाठ के अनुसार 7 से 9 आयतों वाली लड़ाई *कहां* हुई ?
4. मीकाईल के बारे में बाइबल क्या बताती है, जिसका उल्लेख हमारे पाठ में है ?
5. उत्पत्ति 3:15 में दी गई प्रतिज्ञा और उसके पूरा होने पर चर्चा करें।
6. कुछ आयतों की सूची बनाएं जो बताती हैं कि शैतान को यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय हरा दिया गया था।
7. क्रूस ने मनुष्य जाति पर शैतान का गढ़ कैसे तोड़ा ? इसने मनुष्यों को भरमाने की शैतान की बात पर विराम कैसे लगाया ? इसने उसे परमेश्वर के विश्वासी अनुयायियों पर रोक लगाने से कैसे रोका ?
8. आयत 10 में दिए गए ''उद्धार,'' ''सामर्थ,'' ''राज्य,'' और ''अधिकार'' शब्दों पर चर्चा करें।
9. उन आयतों की सूची बनाएं जो सिखाती हैं कि हमारा उद्धार यीशु के लहू के द्वारा हुआ। क्या आप उसके लिए *धन्यवाद देते हैं,* जो यीशु ने क्रूस पर आपके लिए किया ?
10. शैतान की निरन्तर पराजय में मनुष्य के योगदान पर चर्चा करें। ''अपनी गवाही के वचन के कारण'' और ''अपने प्राणों को प्रिय न जाना, यहां तक कि मृत्यु भी सह ली'' वाक्यांशों पर चर्चा करें।
11. अपनी पराजय पर शैतान की क्या प्रतिक्रिया थी ? उसे ''बड़ा क्रोध'' क्यों आया ?
12. पाठ में बताया गया है कि घायल पशु कितना खतरनाक होता है। क्या कभी आपका सामना किसी घायल पशु से हुआ है ? यह उदारहण शैतान पर कहां तक लागू होता है।

बड़े अजगर को पृथ्वी पर गिराते हुए मीकाईल (12:7-9)